डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

B.A. Part – I
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper – I

Date:- 23-02-2022

Page No.
Date

कबीरदास के पद की व्याख्या (भाग-1)

सोऊं तो सुपनै मिलै,
जागौं तो मन माहिं।
लोयन राता सुधि हरी,
बिछुरत कबहूं नाहिं॥

व्याख्या :-

कबीरदास कहते हैं कि अद्वैत ब्रह्म का उपासक अपने इष्ट का स्वप्न में दर्शन करता है और जगने पर भी वह उसके मन में ही समाया रहता है। जो हर क्षण सद्गुरु से प्रेम करता है और किसी भी अवस्था में उससे अलग नहीं होता वही सच्चा भक्त है, साधक है।

तूं तूं करता तू भया,
मुझ मैं रही न हूं।
वारी फेरी बलि गई,
जित देखौं तित तूं॥

व्याख्या :-

कबीरदास कहते हैं कि हे परमात्मा! तुम्हारे नाम का सुमिरन करते करते मैं तुम जैसा हो गया हूं। अब मेरे मन में सांसारिक वासना, ममता एवं तृष्णा नहीं

Scanned by CamScanner

है। मैं तेरे अविनाशी नाम ज्ञान के ऊपर न्यौछावर हूं। मेरी दृष्टि जिधर भी घुमती है उधर तुम्हारा ही स्वरूप दिखाई देता है।

Scanned by CamScanner